इन्टरव्यू संख्या २१

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम तनरेज अख्तर है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 18 साल है।

प्र: कितने साल से इस काम में लगे हैं ?
ज: दो साल से।

प्र: ये आपका अपना करघा है ?
ज: हां, अपना है।

प्र: और कितने करघे हैं, आपके पास ?
ज: हमारे पास तो पांच है, घर पर बाप हमारे बुनते है, और कारीगर और बुनते हैं। और घर पर चचा लोग भी सब मिलकर काम करते हैं।

प्र: पांच करघा है, जिसपर सब मिलकर काम करते हैं ?
ज: हां। सब मिलकर।

प्र: सब करघे का मिलाकर कितनी आमदनी आपकी होती होगी ?
ज: ज्यादा से ज्यादा 500 रोज होती होगी, कारखाने के हर (करघे में) 100 रुपये रोज होती है।

प्र: हर करघे पर 100, हर साड़ी पर या हर करघे पर ?
ज: नहीं एक दिन में एक करघे पर 100 रुपये की आमदनी हो जाती है।

प्र: एक दिन में हो जाती है। एक दिन में तो साड़ी नहीं बनती होगी ?
ज: नहीं पांच छ: दिन में बनती है, ये आप के ऊपर है।

प्र: और साड़ी पर है कि डिजाईन कैसी हो ?
ज: डिजाइन जैसी चाहे बनवाइये, आपके ऊपर है, हल्का हो, मारी हो।

प्र: तो जो आप कह रहे हैं कि 100 रुपये एक दिन का मुनाफा है, वो कैसे हुआ, वो तो एक साड़ी का होगा शायद ?
ज: नहीं एक दिन का। ये अपनी मेहनत या मजदूरी जिसको बोलते हैं।

प्र: अच्छा, अच्छा तो महीने का कितना हो जाता होगा, सब करघों का मिलाकर ?
ज: ये तो हमको मुश्किल पड़ेगा बताना अभी, अभी तो नहीं बता सकते।

प्र: अच्छा पहले आपके पास, अब्बू के पास और भी करघे थे ?
ज: नहीं बस यही।

प्र: शुरू से ही बस इतना ही करघा रहा ?
ज: अभी, मतलब जब से होश संभाला इतना ही है पहले कितना था, वहीं मालुम।

प्र: उससे आप लोगों का खर्चा आराम से निकल आता है ?

ज: हां, एकदम आराम से, नहीं दिक्कत नहीं होती।

प्र: अच्छा आपको पता होगा कि अब्बू के जमाने से लेकर, मतलब जब से आप होश संभाले तब से लेकर अभी तक बुनकरों की स्थिति में कोई बदलाव आया है, अच्छा हुआ है या...?
ज: नहीं हमारे समझ से तो और बुरा हुआ है, और खराब स्थिति हो गया है, पहले से बहुत ज्यादा स्थिति, खराब हो गयी है।

प्र: किस मायने में, साड़ी बिकती नही है या काम की कमी ?
ज: नहीं काम की कमी नहीं है, साड़ी नहीं बिकती, इसीलिए मतलब काम की कमी है बस।

प्र: क्यों नहीं बिकती है साड़ी, इसका कुछ अन्दाजा होगा ?
ज: ये जो आजकल पावरलूम चला है, इसी की वजह से, जो साड़ी हम लोग छः पांच दिन में तैयार करते है, वो उसपर एक दिन में तैयार हो जाती है साड़ी, इसीलिए उसी की खपरा ज्यादा होती है, यही कारण है कि हम लोग परेशान ज्यादा हैं।

प्र: अच्छा कितने साल से ये खराब स्थिति आई है ?
ज: तीन चार साल हो गया।

प्र: तब से ऐसे ही चल रही है स्थिति ?
ज: हां जी।

प्र: तो आप लोगों की कोई समिति वगैरह नहीं है बुनकरों की, जो एक साथ इसके खिलाफ आवाज उठायें ?
ज: हां, लेकिन एकता नहीं हैं, हम लोगों में, एकता जब हो जायेगी तब कोई समस्या ही नहीं रहेगी।

प्र: लेकिन समिति तो है ?
ज: हां, समिति है।

प्र: किसी समिति का नाम बतायेंगे ?
ज: हमारे मुहल्ले में हैं, रमजान नेता, उन्हीं की है, नाम से तो हम नहीं वाकिफ हैं।

प्र: उससे आप भी जुड़े हैं ?
ज: हां जुड़े तो हैं।

प्र: क्या-क्या काम वो लोग करते हैं बुनकरों के लिए ?
ज: जैसे कोई सम्मेलन होता है, तो हम लोगों को बुलाते हैं।

प्र: सम्मेलन में बूनकरों की समस्या उठाते हैं ?
ज: हां बुनकरों की ज्यादा समस्या उठाते हैं।

प्र: जैसे,.. रेशम का दाम, या किस चीज को उठाते हैं, क्या क्या समस्या हैं ?

ज: उन सब के बारे में तो जानकारी हमको नहीं है, इन सब में उतना इन्टरेस्ट नहीं है, उनता जब इन्टरेस्ट देंगे, तब खुद मालुम हो जायेगा।

प्र: अच्छा आप ये बताइये कि आप आगे भी कहीं काम करना चाहते हैं ?
ज: नहीं, आगे नहीं करना चाहते।

प्र: क्या चाहते हैं, आप करना ?
ज: आगे कोई भी दूसरा काम करना चाहते हैं।

प्र: लेकिन बुनकारी से ही जुड़ा था दूसरा कोई और ?
ज: यही बुनकारियों से जुड़ा दूसरा कुछ नहीं।

प्र: मतलब केवल बुनाई छोड़ना चाहते हैं ?
ज: हां बुनाई छोड़ना चाहते हैं।

प्र: किस फील्ड में आप जाना चाहते हैं ?
ज: जैसे, साड़ी की खरीद, बेच डायरेक्ट हमारी ओर से, ये बीनना नहीं, बस खरीदना और बेचना, किसी से लिए और ग्राहक के बेंचे, बस वही।

प्र: आप अपने घर में सबसे बड़े हैं ?
ज: हां सबसे बड़े हैं।

प्र: चलिए, आपका सपना पूरा हो।